SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

प्रताप शर्मा, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
प्रताप शर्मा, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर,
अरुणाचल प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 17/12/2020
Plagiarism : 09% on 11/12/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

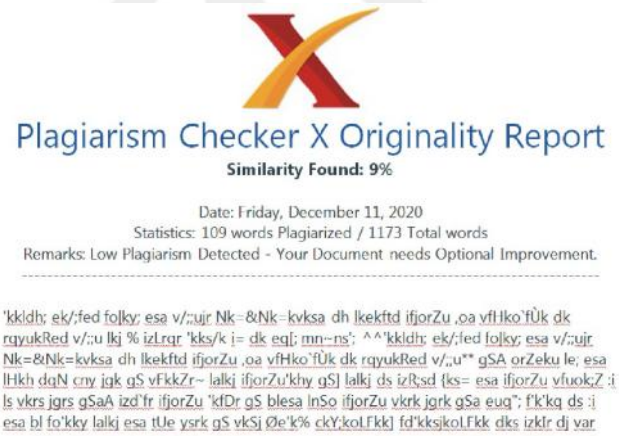

Date: Friday, December 11, 2020
Statistics: 109 words Plagiarized / 1173 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

'kkldh; ek/;fed fo|ky; esa v/;;ujr Nk=&Nk=kvksa dh lkekftd ifjorZu ,oa vfHko`fÙk dk rqyukRed v/;;u lkj % izLrqr 'kks/k i= dk eq[; mn~ns'; ^^'kkldh; ek/;fed fo|ky; esa v/;;ujr Nk=&Nk=kvksa dh lkekftd ifjorZu ,oa vfHko`fÙk dk rqyukRed v/;;u** gSA orZeku le; esa lHkh dqN cny jgk gS vFkkZr~ lalkj ifjorZu'khy gS] lalkj ds izR;sd {ks= esa ifjorZu vfuok;Z :i ls vkrs jgrs gSaA izd`fr ifjorZu 'kfDr gS blesa lnSo ifjorZu vkrk jgrk gSa euq"; f'k'kq ds :i esa bl fo'kky lalkj esa tUe ysrk gS vkSj Øe'k% ckY;koLFkk] fd'kksjkoLFkk dks izkIr dj var

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ''शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' है। वर्तमान समय में सभी कुछ बदल रहा है अर्थात् संसार परिवर्तनशील है, संसार के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन अनिवार्य रूप से आते रहते हैं। प्रकृति परिवर्तन शक्ति है इसमें सदैव परिवर्तन आता रहता हैं। मनुष्य शिशु के रूप में इस विशाल संसार में जन्म लेता है, और क्रमशः बाल्यावस्था, किशोरावस्था को प्राप्त कर अंत में मृत्यु के मुख में समा जाता है। ठीक उसी प्रकार मानव समाज में अनवरत परिवर्तन का क्रम चलता रहता है। समय–समय में जो परिवर्तन आता है उन्हें सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। जब सामाजिक परिवर्तन होता है तो छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति भी परिवर्तन के साथ–साथ बदलती रहती है। सामाजिक परिवर्तन से अभिवृत्ति किस प्रकार की हो जाती है। यही सब जानने का प्रयास शोध पत्र के माध्यम से किया जा रहा है।

मुख्य शब्द

सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

मानव समाज में रहते हुए बहुत कुछ सीखता है, एक दूसरे से व्यवहार करना, एक दूसरे के सुख–दुख में साथ रहना, एक दूसरे की सहायता करना। जैसे वातावरण में वह रहता है वैसे ही वह आचरण करता है। पशुओं का कोई समाज नहीं होता है, वह तो केवल स्वच्छन्द विचरण करते हैं। मानव स्वभाव कोमल, कठोर, ईर्ष्यालु एवं कई तरह का होता है वे अपने स्वभावगत विशेषताओं से समाज में विचरण करते हैं और समय–समय पर उनके सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है। मानव

की अभिवृत्ति सामाजिक परिवर्तन से पूर्ण रूप से जुड़ी रहती है। जैसा वह समाज से ग्रहण करता है उसी प्रकार से उसका व्यवहार दूसरों से होता है।

सामाजिक परिवर्तन

आधुनिक संसार में प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजों ने अपने तरीके से इन विकासों को समाहित किया है, उनका उत्तर दिया है, जो कि सामाजिक परिवर्तनों में परिलक्षित होता है। इन परिवर्तनों की गति कभी तीव्र रही है कभी मन्द। कभी–कभी ये परिवर्तन अति महत्वपूर्ण रहे हैं तो कभी बिल्कुल महत्वहीन। कुछ परिवर्तन आकस्मिक होते हैं, हमारी कल्पना से परे और कुछ ऐसे होते हैं जिसकी भविष्यवाणी संभव थी। कुछ से तालमेल बिठाना सरल है, जब कि कुछ को सहज ही स्वीकारना कठिन है। कुछ सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट है एवं दृष्टिगत हैं, जब कि कुछ देखे नहीं जा सकते, उनका केवल अनुभव किया जा सकता है। हम अधिकतर परिवर्तनों की प्रक्रिया और परिणामों को जाने समझे बिना अवचेतन रूप से इनमें शामिल रहे हैं। जब कि कई बार इन परिवर्तनों को हमारी इच्छा के विरुद्ध हम पर थोपा गया है। कई बार हम परिवर्तनों के मूक साक्षी भी बने हैं। व्यवस्था के प्रति लगाव के कारण मानव मस्तिष्क इन परिवर्तनों के प्रति प्रारंभ में शंकालु रहता है, परन्तु शनैः शनैः उन्हें स्वीकार कर लेता है।

डॉवसन व गेटीस के अनुसार –''सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन है, क्योंकि समस्त संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ और प्रयोगों में सामाजिक है।''

प्रत्येक व्यक्ति के मन में तथ्यों, वस्तुओं, विचारों तथा घटनाओं के प्रति कुछ निश्चित धारणाएं विकसित हो जाती हैं। इन धारणाओं के कारण ही व्यक्ति किसी चीज को पसन्द या नापसंद करता है, किसी को देखकर उसी में झूम जाते हैं तो किसी को देखकर घृणा से मुख सिकोड़ लेते हैं। इन धारणाओं के फलस्वरूप ही व्यक्ति पदार्थों, घटनाओं, विचारों, व्यक्तियों, पशु, पक्षियों, धर्मों, राष्ट्रों, जातियों, प्रथाओं और संस्थाओं के प्रति व्यवहार करते हैं।

व्यक्ति किसी निश्चित समाज में रहता है, और शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त करता है, अतः इनका उसकी अभिवृत्तियों पर प्रभाव पड़ता है। बहुत सी अभिवृत्तियाँ उसे अपने माता–पिता से प्राप्त होती हैं। जन्म से ही हमारी अभिवृत्तियों का विकास होता रहता है। भोजन, वस्त्र, माता–पिता, संगी–साथियों के बारे में बचपन में ही हम एक निश्चित अभिवृत्ति बना लेते हैं।

शोध उद्देश्य

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन की स्थिति का अध्ययन करना।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

इस शोध हेतु सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति के लिए N. S. Chauhan and Saroj Aurora etc. Attitude Scale का हिन्दी संस्करण प्रयुक्त किया गया।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के ग्वालियर नगर के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

न्यादर्श

शोध अध्ययन में ग्वालियर नगर के 02 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। कुल 50 विद्यार्थी में से 25 छात्र एवं 25 छात्राएं सम्मिलित की गई हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकीय

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. 'टी' परीक्षण

आँकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना 1 –शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिवर्तन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका क्र. 1 : शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रतांश	विश्वास स्तर		टी–मान
शासकीय छात्र	1.74	0.73	48	0.01	2.69	0.28
शासकीय छात्राऐं	1.80	0.78		0.05	2.02	

48 स्वतंत्रतांश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.69 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.02 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.28 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिवर्तन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2 –शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका क्र. 2 : शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रतांश	विश्वास स्तर		टी–मान
शासकीय छात्र	1.52	0.68	48	0.01	2.69	1.37
शासकीय छात्राऐं	1.81	0.81		0.05	2.02	

48 स्वतंत्रतांश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.69 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.02 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.37 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकल कर आया है कि दोनों के मध्यमानों में आंशिक अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। छात्र एवं छात्राऐं समान रूप

से विद्यालय में अध्ययन करते हैं जिससे वे समान रूप से ही सामाजिक परिवर्तन को आत्मसात् करते हैं तथा उनकी अभिवृत्ति भी समान पाई जाती है, इसीलिए शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिवर्तन एवं अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सुझाव

1. समाज में हो रहे परिवर्तनों से छात्र–छात्रा तभी प्रभावित हो सकते हैं, जब वे समाज में अपनी सहभागिता रखते हो। अतएव छात्र–छात्राओं को सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता रखनी चाहिए।
2. परिवार में अभिभावकों का यह दायित्व होना चाहिए कि वे बच्चों को सामाजिक गतिविधियों से समय–समय पर अवगत कराते रहें।
3. विद्यार्थियों को सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करना चाहिए, जिससे वे अपनी सकारात्मक अभिवृत्ति बना सके।
4. विद्याथियों को पारिवारिक वातावरण में बड़ों के सान्निध्य में रहकर अनुशासन का पालन करना चाहिए, जिससे वे सामाजिक परिवर्तन को सहज रूप में ले सके।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन, (2005) *''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन''*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. अग्रवाल जे.सी., (2012), *''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा''*, अग्रवाल पब्लिकेशन।
3. बत्रा, दीनानाथ, (1995), *"जीवन मूल्यों की शिक्षा तथा चरित्र निर्माण"*, आलोक वार्षिक पत्रिका, शिशु शिक्षा समिति, अवध प्रांत, लखनऊ।
4. भार्गव, एम., *''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण + मापन''*, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2007।
5. गुप्ता, एस.पी., (2006), *''आधुनिक मनोविज्ञान''*, शरद पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. गुड, कार्टर, (1981), *''शिक्षा मनोविज्ञान''*, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

****